शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि, लिंग एवं उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन

*प्रो. एच. आर. पाल
संतोष एस्के (शोधार्थी)
*प्रोफेसर इमेरिटस यूजीसी
आचार्य एवं पूर्व संकायाध्यक्ष
*शिक्षा अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

*प्रस्तुत शोध देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के स्नातक स्तर पर हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि, लिंग एवं उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन, शिक्षा तकनीक के क्षेत्र से संबंधित है। अधिक स्पष्ट तौर पर कहा जाए तो यह हिन्दी साहित्य के 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' विषय पर स्व-अनुदेशन सामग्री के विकास तथा उसकी प्रभाविता से संबंधित शोध है। प्रस्तुत शोध कार्य का अग्र उद्देश्य था- 1. विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि, लिंग एवं उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना, जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो। प्रस्तुत शोध कार्य की अग्र परिकल्पना थी- 1. विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि, लिंग एवं उनकी अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो।" प्रस्तुत शोध के न्यादर्श के रूप में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त शासकीय महाविद्यालय के कला स्नातक के हिन्दी साहित्य विषय वाले 200 विद्यार्थियों का सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। उद्देश्यनुरूप प्रदत्त विश्लेषण के लिए सहप्रसरक विश्लेषण के 2x2 (**Two Way Ancova**) कारकीय प्रारूप का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से अग्र निष्कर्ष प्राप्त हुआ- 1. स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अर्थात् हिन्दी साहित्य विषय पर निर्मित स्व-अनुदेशन सामग्री, स्नातक स्तर के छात्र और छात्राओं की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के सन्दर्भ में एक समान रूप से प्रभावी पायी गयी।*

प्रस्तावना

वर्तमान में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तीव्रगति से विकास हो रहा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न नवीन विषय जुड़ रहे हैं। साथ ही अध्ययन-अध्यापन की भी अनेक नवीन विधियों का विकास हो रहा है जैसे- पारंगतता

अधिगम (Mastery learning), परियोजना (Project), अभिक्रमित अनुदेशन (Programmed Instruction), कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन सामग्री (Computer Assisted Instruction) एवं प्रमाप (Module) आदि। आजकल स्व-अध्ययन के लिए जो प्रणाली प्रयोग में लायी जा रही है, उनमें अभिक्रमित अनुदेशन, कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन, एवं प्रमाप मुख्य है। विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों में अध्यापक के बिना भी विद्यार्थी के स्वयं सीखने की क्षमता होती है। वे अध्यापक द्वारा की गयी व्यूह रचना में स्वयं अपनी समस्याओं का समाधान निकाल सकते हैं। स्व-अनुदेशन सामग्री, विद्यार्थी के स्वयं के द्वारा सीखने के साधन के रूप में प्रयोग में लायी जाती है। स्व-अनुदेशन सामग्री किसी विषयवस्तु की सरलतम और विस्तृत व्यूह रचना होती है। ये सभी सामग्रियाँ व्यक्तिपरक अनुदेशन प्रदान करती हैं।

1.1. व्यक्तिपरक अनुदेशन

विद्यार्थियों में व्याप्त वैयक्तिक भिन्नताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का संचालन किया जाना चाहिए, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी विशेषताओं के आधार पर अनुदेशन प्राप्त कर सके। जब इस प्रकार अनुदेशन प्रदान किया जाता है, तो इसे व्यक्तिपरक अनुदेशन कहा जाता है। हसन एवं पोस्टलेथवेट (1985) के अनुसार-‘व्यक्तिपरक अनुदेशन शिक्षण का वह रूप है जिसमें अनुदेशन एक व्यक्ति के आधार पर प्रदान किया जाता है, न कि सामूहिक आधार पर, ताकि अधिगमकर्ता की रुचि, योग्यता, क्षमता व आवश्यकता के अनुरूप शिक्षण प्रदान किया जा सके।’

1.2. प्रमाप

प्रमाप एक स्व-अनुदेशन सामग्री है जो स्वतः परिपूर्ण व स्वतंत्र इकाई होती है, जिसमें निश्चित विषय वस्तु को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी अपनी गति, रुचि, योग्यता के अनुरूप अध्ययन करते हुए प्रमाप के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने की ओर अग्रसर होता है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु प्रमाप में उचित व स्पष्ट अनुदेशन, विविध गतिविधियाँ तथा अधिगम अनुभवों की व्यवस्था रहती है। प्रमाप में पूर्व परीक्षण, विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण के पश्चात स्वमूल्यांकन हेतु पश्च परीक्षण की व्यवस्था होती है। अतः प्रत्येक प्रमाप में अनुदेशन के तीन आधारभूत समन्वित घटकों उद्देश्य, अधिगम गतिविधियाँ व मूल्यांकन को सम्मिलित किया जाता है (शर्मा,1985)। पाल एवं शर्मा (2009) ने अनुदेशन सामग्री विकास की निम्न रूपरेखा बतायी है - 1. परिचय (Introduction) 2. उद्देश्य (Objectives), 3. विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण (Presentation of content) 4. अधिगम अभ्यास (Learning practices), 5. शब्द सूची (Glossary), 6. आगे अध्ययन के लिये पुस्तकें (Books for further study)।

2. औचित्य

पूर्व शोधों के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि स्व-अनुदेशन सामग्री के विविध रूपों से सम्बन्धित, विभिन्न शोध हुए हैं जिनमें प्रमाप की परम्परागत व अन्य विधियों से प्रभाविता से संबंधित पूर्व शोध- हुरमाड़े (2012), शर्मा (2009), पाठक (2008), देवेन्द्रकुमार (2005), पंडित (2003), आहुजा (2002) एवं कोहली (1999) ने किया है। भाषा एवं साहित्य के विविध पक्षों से सम्बन्धित शोध- पंडित (2003), पन्नालाल (2001), दानिखेल (1998), उमादेवी

(1997)। पूर्व शोधों के अध्ययन से स्पष्ट है कि स्व-अनुदेशन सामग्री के विविध रूपों से सम्बन्धित विभिन्न शोध हुए हैं। प्रमाप की परम्परागत व अन्य विधियों से प्रभाविता से सम्बन्धित तथा भाषा एवं साहित्य के विविध पक्षों से सम्बन्धित भी शोधकार्य हुए हैं परन्तु स्नातक स्तर के हिन्दी साहित्य विषय में प्रमाप का विकास व उसकी प्रभाविता से सम्बन्धित कोई शोध कार्य नहीं किया गया है। इससे हिन्दी साहित्य विषय पर प्रमाप के विकास व उसकी विभिन्न चरों के सन्दर्भ में प्रभाविता के अध्ययन की आवश्यकता प्रतिपादित होती है। प्रस्तुत शोध महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि, लिंग एवं उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन के सन्दर्भ में हुरमाड़े (2012), शर्मा (2009) एवं पाठक (2008) द्वारा अध्ययन किया गया है जो कि इस क्षेत्र में कम शोध होना दर्शाता है। इससे प्रस्तुत शोध की आवश्यकता प्रतिपादित होती है।

3. उद्देश्य

1. विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि, लिंग एवं उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना, जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो।

4. परिकल्पना

1. विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि, लिंग एवं उनकी अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो।

5 न्यादर्श

प्रस्तुत शोध की समष्टि इन्दौर सम्भाग के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से संबंद्धित महाविद्यालय के स्नातक स्तर के कला संकाय के विद्यार्थी थे। इस समष्टि में से देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के संबंद्धित महाविद्यालय के स्नातक स्तर के कला संकाय के हिन्दी साहित्य विषय वाले 200 विद्यार्थियों का सोद्देश्य न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। प्रस्तुत शोध के न्यादर्श में चयनित विद्यार्थी सभी सामाजिक-आर्थिक स्तर व षहरी एवं ग्रामीण आवासीय पृष्ठभूमि के थे। इन विद्यार्थियों की उम्र 19 से 22 वर्ष के मध्य थी। चयनित विद्यार्थी केवल कला संकाय के हिन्दी साहित्य विषय वाले थे। चयनित विद्यार्थियों में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग व सामान्य वर्ग के विद्यार्थी सम्मिलित थे। न्यादर्श का विस्तृत वर्णन निम्न प्रकार है -

न्यादर्श हेतु तालिका क्र. 1

क्र.स	महाविद्यालय का नाम	छात्र	छात्रा	कुल
	प्रयोगात्मक समूह			
1	शासकीय महाविद्यालय, धरमपुरी (जिला धार)	23	27	50
2	शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेंधवा (जिला बडवानी)	29	30	59
	नियंत्रित समूह			
1	शासकीय महाविद्यालय, धामनोद (जिला धार)	20	26	46
2	शासकीय महाविद्यालय, निवाली (जिला बडवानी)	23	22	45

शब्द-ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

6. शोध प्राकल्प

प्रस्तुत शोध प्रयोगात्मक प्रकार का था, जिसमें गैर समतुल्य नियन्त्रित समूह प्राकल्प का उपयोग किया गया। प्राकल्प का सांकेतिक रूप इस प्रकार है-

o x o

o x o (केम्पबेल एवं स्टेनले, 1963, पृ. 47)

जहाँ o = निरीक्षण, x = उपचार

o................= असमतुल्यता

प्रस्तुत शोध में दो समूह प्रयोगात्मक व नियन्त्रित थे। प्रयोगात्मक समूह को स्व-अनुदेशन सामग्री द्वारा तथा नियन्त्रित समूह को परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण प्रदान किया गया। प्रस्तुत शोध में उपचार की अवधि 2 माह की थी। शोध में हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि व विकसित स्व-अनुदेशन सामग्री के प्रति प्रतिक्रियाएँ आश्रित चर थे।"

शोध में शिक्षण विधि एवं बुद्धि स्वतन्त्र चर थे। शोध में हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सह प्रसरक के रूप में लिया गया तथा सह प्रसरण विश्लेषण (Ancova) के द्वारा इसे नियन्त्रित किया गया।

7. उपकरण

7.1. हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य में उपलब्धि के आकलन हेतु शोधक द्वारा निर्मित निकष परीक्षण का उपयोग किया गया। प्रस्तुत परीक्षण का निर्माण शोधक द्वारा विकसित स्व-अनुदेशन सामग्री के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया गया। इस परीक्षण में 100 वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को शामिल किया गया, जो सभी बहुविकल्पीय प्रकार के थे। इन प्रश्नों के सामने दिए गए चार विकल्पों में से किसी एक विकल्प पर सही का निशान लगाकर उत्तर देना था। प्रस्तुत परीक्षण की समयावधि 1 घण्टा और 30 मिनिट की थी। प्रत्येक प्रश्न 01 अंक का था।

8.प्रदत्त संकलन

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रदत्त संकलन हेतु सर्वप्रथम चयनित महाविद्यालयों के प्राचार्य से अनुमति प्राप्त की गयी। तत्पश्चात न्यादर्श हेतु चयनित विद्यार्थियों को मौखिक रूप से दिशा-निर्देश देकर शोध के उद्देश्यों से अवगत करवाकर आत्मिक सम्बन्ध स्थापित किये गए। इसके पश्चात् चयनित विद्यार्थियों को तालिका क्र. 01 के अनुसार दो समूहों में विद्यार्थियों को रखा गया। दोनों समूहों पर शोधक द्वारा निर्मित पूर्व उपलब्धि निकष परीक्षण का प्रशासन किया गया। निकष परीक्षण के प्रशासन के पश्चात यादृच्छिक रूप से एक समूह को स्व-अनुदेशन सामग्री तथा दूसरे समूह को परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण प्रदान किया गया। तत्पश्चात दोनों समूहों के विद्यार्थियों पर शोधक द्वारा निर्मित पश्च उपलब्धि निकष परीक्षण का प्रशासन किया गया। निकष परीक्षण व प्रतिक्रिया मापनी पर शोधक द्वारा निर्धारित पर पूर्व मानदण्डों के आधार पर फलांकन किया गया। प्राप्त प्रदत्तों को लिंग के आधार पर वर्गीकृत कर लिया गया इस प्रकार शोध के आश्रित व स्वतन्त्र सभी चरों के प्रदत्त एकत्रित कर लिये गए।

9. प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों के अनुरूप अग्र सांख्यिकीय विधियों के द्वारा प्रदत्तों का विष्लेषण किया गया -

हिन्दी साहित्य में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लेते हुए विद्यार्थियों के हिन्दी साहित्य

विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि, लिंग तथा उनकी अंतर्क्रिया के प्रभाव के अध्ययन हेतु सहप्रसरक विश्लेषण के 2x2 कारकीय प्रारूप का उपयोग किया गया।

10. परिणाम एवं विवेचना

1. विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि, लिंग एवं उनकी अंतर्क्रिया का प्रभाव, जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो।

प्रस्तुत शोध की द्वितीय परिकल्पना थी - 'विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि, लिंग एवं उनकी अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा, जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो। यहाँ दो स्वतंत्र परिवर्ती थे -'शिक्षण विधि' एवं 'लिंग'। शिक्षण विधि के दो स्तर थे - स्व-अनुदेशन सामग्री एवं परम्परागत शिक्षण विधि। इसी प्रकार लिंग परिवर्ती के भी दो स्तर थे - छात्र एवं छात्रा। मानदण्ड परीवर्ती 'विद्यार्थियों के हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि' थी। 'हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि' को सहप्रसरक के रूप में लिया गया था। अतः इस उद्देश्य से संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण 'द्विमार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण' (Two way Analysis of Co-variance) की सहायता से किया गया। विश्लेषण से प्राप्त परिणाम तालिका 02 में दिए गए हैं।

तालिका 02: महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के सन्दर्भ में 2x3 कारकीय प्रकल्प द्विमार्गीय सहप्रसरण विश्लेषण' (2x3 **Factorial Design of Two way Analysis of Co-variance**) का सारांश, जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो।

विचरण के स्रोत	स्वतन्त्रता की कोटि (df)	वर्गों का योग (SS)	वर्गों का माध्य योग (MSS)	एफ मान (F Value)	सार्थकता स्तर (LOS)
शिक्षण विधि	1	15069.51	15069.51	145.68**	0.00
लिंग	1	37.25	37.25	0.36 - NS	0.55
शिक्षण विधि एवं लिंग की अंतर्क्रिया	1	297.79	297.79	2.88 NS	0.09
त्रुटि	195	20171.48	103.44		
योग	198				

**- 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

NS - 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं

तालिका 02 से स्पष्ट होता है, कि शिक्षण विधि के लिए समायोजित 'F' का मान 145.68 है, जिसके लिए सार्थकता स्तर का मान स्वतंत्रता की कोटि (df) = 1/195 पर 0.00 है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.01 से छोटा है, अतः शिक्षण विधि के लिए समायोजित 'F' का मान सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अर्थात् स्व-अनुदेशन सामग्री एवं परम्परागत शिक्षण विधि

समूह के विद्यार्थियों के हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर है, जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो। अतः इस परिस्थिति में शून्य परिकल्पना "स्व-अनुदेशन सामग्री एवं परम्परागत शिक्षण विधि समूह के विद्यार्थियों के हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांको में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो" निरस्त की जाती है। आगे स्पष्ट है कि स्व-अनुदेशन सामग्री के द्वारा उपचारित विद्यार्थियों के हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांक का मान 64.22 है, जो कि परम्परागत शिक्षण विधि समूह के विद्यार्थियों के हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के समायोजित माध्य फलांक 46.72 से सार्थक रूप से उच्च है, जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो।

अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि स्व-अनुदेशन सामग्री के द्वारा दिया गया उपचार, परम्परागत शिक्षण विधि से हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के संदर्भ में सार्थक रूप से प्रभावी पाया गया, जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो।

तालिका 02 से स्पष्ट होता है, कि लिंग के लिए 'F' का मान 0.36 है, जिसके लिए सार्थकता स्तर का मान स्वतंत्रता की कोटि (df) = 1/195 पर 0.55 है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 से बड़ा है, अतः लिंग के लिए समायोजित 'F' का मान सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है। अर्थात् स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के माध्य फलांकों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः इस परिस्थिति में शून्य परिकल्पना "स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के माध्य फलांकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा" निरस्त नहीं की जाती है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका 02 से स्पष्ट होता है, कि शिक्षण विधि एवं लिंग की अंतर्क्रिया के लिए 'F' का मान 2.88 है, जिसके लिए सार्थकता स्तर का मान स्वतंत्रता की कोटि (df) = 1/195 पर 0.09 है, जो कि सार्थकता के स्तर 0.05 से बड़ा है, अतः शिक्षण विधि एवं लिंग की अंतर्क्रिया के लिए समायोजित 'F' का मान सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक नहीं है। अर्थात् शिक्षण विधि एवं लिंग की अंतर्क्रिया का हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है। अतः इस परिस्थिति में शून्य परिकल्पना "स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि एवं लिंग की अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा" निरस्त नहीं की जाती है।

अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि एवं लिंग की अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य विषय पर निर्मित स्व-अनुदेशन सामग्री, स्नातक स्तर के छात्र और छात्राओं की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के सन्दर्भ में एक समान रुप से प्रभावी पायी गयी।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

14.निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के अध्ययन से निम्नानुसार निष्कर्ष प्राप्त हुए :

1. स्व-अनुदेशन सामग्री के द्वारा दिया गया उपचार, परम्परागत शिक्षण विधि से हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के संदर्भ में सार्थक रूप से प्रभावी पाया गया, जबकि हिन्दी साहित्य विषय में पूर्व उपलब्धि को सहप्रसरक के रूप में लिया गया हो।

2. स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

3. स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि पर शिक्षण विधि एवं लिंग की अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य विषय पर निर्मित स्व-अनुदेशन सामग्री, स्नातक स्तर के छात्र और छात्राओं की हिन्दी साहित्य विषय में उपलब्धि के सन्दर्भ में एक समान रुप से प्रभावी पायी गयी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 Buch, M. B. (Ed.): Third Survey of Research in Education, (1978-1983). New Delhi: NCERT, 1986.

2 Buch, M. B. (Ed.): Forth Survey of Research in Education (1983-1988)- Vol I & II. New Delhi: NCERT, 1991.

3 Garrett, H. E.: Statistics in Psychology and Education. Ludhiyana: Kalyani Publishers, 2010.

4 Fifth Survey of Research in Education-Vol II (1988-1992): NCERT, New Delhi,2000.

5 Sixth Survey of Research in Education-Vol I (1993-2000): NCERT, New Delh,2006.

6 Sixth Survey of Research in Education-Vol II (1993-2000): NCERT, New Delhi, 2007.

7. पाल, एच. आर., उच्च शिक्षा में अध्यापन एवं प्रशिक्षण की प्रविधियाँ. हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली 2006

8. शर्मा, आर. ए. अनुदेशनात्मक एवं शिक्षण तकनीकी. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 1969

9. शर्मा, आर. ए., शिक्षण अधिगम मे नवीन प्रर्वतन. लायल बुक डिपो, मेरठ, j.

10. गुप्त, एम., भाषा शिक्षण सिद्धांत एवं प्रविधि, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1985.

11. दुबे व अन्य: प्रयोजनमूलक हिन्दी. मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2009.

12. शर्मा, बी.एन., हिन्दी शिक्षण, साहित्य प्रकाशन, आगरा, 2000.

13. सिंह, एस., हिन्दी शिक्षण, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2004.

14. सिंह, एन.के., माध्यमिक विद्यालय में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1990.

15. लाल, बी.एन., हिन्दी शिक्षण, साहित्य प्रकाशन, आगरा, 2000.

*16. मिश्र आर. एवं शर्मा आर., प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, **2005.***